उपरोक्त श्लोक में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को इसी तथ्य का संकेत किया है। अगले श्लोकों में इस सिद्धान्त का अधिक विशद वर्णन है।

12.2

एषा तेऽभिहिता सांख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां शृणु।
बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि।।३९।।

एषा=यह; **ते**=तेरे लिए; **अभिहिता**=कही गयी; **सांख्ये**=सांख्ययोग के विषय में; **बुद्धिः**=बुद्धि; **योगे**=निष्काम कर्म के विषय में; **तु**=तथा; **इमाम्**=इसे; **श्रृणु**=श्रवण कर; **बुद्ध्या**=बुद्धि से; **युक्तः**=युक्त हुआ; **यया**=जिस; **पार्थ**=हे पार्थ (अर्जुन); **कर्मबन्धम्**=कमबन्धन से; **प्रहास्यसि**=मुक्त हो जायगा।

अनुवाद

यहाँ तक मैंने तेरे लिए सांख्य-दर्शन का वर्णन किया। अब उस बुद्धियोग का श्रवण कर जिससे निष्काम कर्म किया जाता है। हे पार्थ! इस बुद्धियोग से युक्त होकर कर्म करने पर तू कर्म-बन्धन से सदा के लिए मुक्त हो जायगा।।३९।।

तात्पर्य

वैदिक शब्दकोष 'निरुक्ति' के अनुसार सांगोपांग तत्त्व-निरूपण करने को 'संख्य' कहते हैं। इस न्याय से 'सांख्य' शब्द उस दर्शन का द्योतक है, जो आत्मतत्त्व का वर्णन करता है। योग का अर्थ इन्द्रियनिग्रह से है। अर्जुन का युद्धोपरति विषयक प्रस्ताव विषयवासना से ही प्रेरित था। अपने प्रधान कर्तव्य को भुला कर वह युद्ध से उपरत हो जाना चाहता था, क्योंकि उसकी धारणा में अपने भाई धृतराष्ट्रपुत्रों को परास्त करके राज्योपभोग करने की अपेक्षा स्वजनों का वध न करने से वह अधिक सुखी रह सकेगा। विजय से प्राप्त होने वाला सुख तथा स्वजनों को जीवित देखने का सुख—इन दोनों के मूल में अपनी इन्द्रियों की तृप्ति की कामना ही है, क्योंकि दोनों में बुद्धि तथा कर्तव्य की अवहेलना है। इसलिए श्रीकृष्ण अर्जुन को यह स्पष्ट करना चाहते थे कि यदि वह पितामह का शरीरांत कर देगा, तो भी उनकी आत्मा का वध नहीं होगा। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि सब जीवों का और स्वयं उन श्रीभगवान् का भी अपनी पृथक् शाश्वत् स्वरूप है। पूर्व में भी उनका केवल अपना-अपना स्वरूप था, इस समय भी है तथा भविष्य में भी उन सबका अपना पृथक-पृथक स्वरूप बना रहेगा। आत्मा वस्तुतः नित्य है, विविध प्रकार से बदलता तो देहरूपी परिधान ही है। इस कारण प्राकृत कलेवर से मुक्ति हो जाने पर भी जीवात्मा का भिन्नस्वरूप बना रहता है। भगवान् श्रीकृष्ण ने आत्मा तथा देह के तात्त्विक अध्ययन का अति विशद वर्णन किया है। आत्मा तथा देह के इस तात्त्विक ज्ञान का प्रतिपादन यहाँ नाना दृष्टिकोणों से सांख्य के रूप में किया गया है। यह स्मरण रहे कि इस सांख्य का अनीश्वरवादी कपिल के सांख्यदर्शन से कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। पाखण्डी कपिल के सांख्य से बहुत पहले श्रीमद्भागवत में भगवान् के अवतार, प्रामाणिक कपिलदेव ने यथार्थ सांख्य का प्रवचन अपनी माता देवहूति को किया था। उन्होंने स्पष्ट कहा है कि पुरुष अर्थात् परमेश्वर क्रियाशील हैं; वे ही प्रकृति पर